Date - 01/02/2022

B.A 1st 2nd Paper

संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक प्रारूप एवं परिवर्तन

समाज में व्यवस्था और परिवर्तन को समझने के लिए प्रकार्यवादियों ने संरचनात्मक प्रकार्यात्मक प्रारूप दिया। इसे सावयवी प्रारूप (Organic Model) तथा हालांईस्टिक मॉडल (Holistic Model) भी कहते हैं। चूंकि यह प्रारूप समाज-व्यवस्था और सावयव की सादृश्यता पर निर्भर है इसलिये इसे सावयव-प्रारूप तथा समाज-व्यवस्था और इसके अंगों का अध्ययन एक सम्पूर्णता के रूप में करने के कारण होलीस्टिक मॉडल कहा जाता है।

संरचनात्मक प्रकार्यात्मक प्रारूप मुख्यतः समाज और सावयव की सादृश्यता पर आधारित है। इस प्रकार के विचार युनानी दार्शनिकों जैसे प्लेटो, स्पेंसर, दुर्खीम, रेडक्लिफ ब्राउन मैलिनोवस्की, मर्टन तथा पारसन्स आदि ने इस प्रारूप को आगे बढ़ाने में विशेष योग दिया। यद्यपि इस प्रारूप के बारे में विभिन्न प्रकार्यवादियों के विचारों में थोड़ी बहुत भिन्नता पायी जाती है फिर भी उनके दृष्टिकोणों में काफी समानता है। सभी प्रकार्यवादी सम्पूर्ण समाज और उसकी इकाइयों के सम्बन्धों पर जोर देते हैं न कि व्यक्ति और समूह पर। संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक प्रारूप से किसी भी समाज व्यवस्था का अध्ययन

करने का तरीका है कि प्रथम उसकी संरचना ज्ञात की जाती है अर्थात यह देखा जाता है कि उसका निर्माण करने वाली इकाइयाँ कौन-2 सी है तथा उसका पारस्परिक सम्बन्ध क्या है? उसके बाद यह देखा जाता है कि समाज या व्यवस्था को बनाये रखने मे प्रत्येक इकाई का क्या योगदान है अर्थात उस इकाई का क्या प्रकार्य है।

जहाँ उद्विकासीय प्राकृप किसी समाज के उद्विकास व परिवर्तन से सम्बन्ध रखता है वहीं संरचनात्मक प्रकार्यात्मक प्राकृप मे एक दिये हुए समय मे ही समाज व्यवस्था का अध्ययन किया जाता है और यह ज्ञात किया जाता है कि एक समय विशेष मे समाज व्यवस्था किस प्रकार कार्य करती है, किसी भी संस्था के अध्ययन के दौरान उद्विकासवादी यह देखने का प्रयत्न करते है कि सम्पूर्ण समाज के उद्विकास के उस संस्था के कौन-2 से स्वरूप विकसित हुए जबकि प्रकार्य यह देखने का प्रयत्न करते है कि समाज-व्यवस्था को बनाये रखने मे उस संस्था का क्या योगदान रहा है। स्पष्ट है कि प्रकार्यवादी प्राकृप मे परिवर्तन का अध्ययन नही

किया जाता है।

संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम में उन दशाओं और माँगों (Demands) का पता लगाया जाता है जिसके द्वारा एक समाज अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है साथ ही यह भी ज्ञात किया जाता है कि समाज की विभिन्न संरचनाएँ और उप संरचनाएँ किस प्रकार परस्पर और एकता बनाये रखती हैं जिससे कि समाज की एकता और सम्पूर्णता बनी रहती है। प्रकार्यवादी इस समस्या का भी समाधान करते हैं कि जब समाज में ऊपरी तौर पर व्यर्थ दिखने वाली प्रथाओं और रीति-रिवाजों का अध्ययन सम्पूर्ण समाज के सन्दर्भ में किया जाता है तो वे उपयोगी व प्रकार्यात्मक प्रकट होते हैं। दुर्खीम और उनके शिष्य माशेल मॉस ने कई सार्वजनिक उत्सवों के प्रकार्यों को ज्ञात किया जो समाज की एकता बनाये रखने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

प्रकार्यवादी यह मानते हैं कि समाज व्यवस्था की सभी इकाइयाँ परस्पर एक दूसरे से जुड़ी हुई प्रथम एकता के सूत्र में बंधी होती हैं अतः समाज व्यवस्था के किसी एक अंग या इकाई में परिवर्तन होने पर दूसरी इकाइयों और सम्पूर्ण समाज व्यवस्था पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। यह

कारण है कि नवाचारों या परिवर्तनों का समाज में विरोध किया जाता है या उन्हें धीमी गति से अपनाया जाता है अथवा ऐसा भी होता है कि एक विशिष्ट उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए समाज में जो योजनाबद्ध परिवर्तन लाये जाते हैं उनके वही परिणाम नहीं निकलते हैं जिसकी आशा की जाती थी। संरचनात्मक प्रकार्यात्मक पद्धति ने विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं के तुलनात्मक अध्ययन में भी महत्वपूर्ण योग दिया। प्रकार्यवादियों का मत है कि समाज व्यवस्था की संरचना में परिवर्तन होने पर उसकी इकाइयों का प्रकार्य निष्पादन की क्षमता में भी परिवर्तन आ जाता है और एक व्यवस्था की उपसंरचना में परिवर्तन उस व्यवस्था की अन्य उपसंरचनाओं को भी प्रभावित करता है तथा संतुलन बिगड़ जाता है। अतः प्रकार्यवादी परिवर्तन पर जोर नहीं देते।

DR Vijant Kumar Mishra
Asst Professor
(Guest Faculty) Patna
Dept of sociology

Date - 10-12-2020
B.A Hons Paper 1 Part 1